मूर्तिनवम:



प्रकाशक पंडित डुनीचंद्रशर्म्मा सत्यम
नवर्द्धनीधर्म्मसभा अमृतसर बाजार
डुलो यह पुस्तक धर्मार्थ है सं० १९५९

लाला रामजीदास मालवार कटड़ा चिड़ाइसकी मदद न
अमरप्रेस अमृतसर در مطبع امر پریس امرتسر باہتمام بھائی نہتا سنگھ مالک मोच

...तहोके ये मूर्त्तितत्व अनेकयत्न सामग...
...ोवेदोंसे निकालकर सर्वसज्जनोकेलीये स
नातन धर्म्मावलंबीजनोके वास्ते प्रकटकराने
है चाहिये के इसमूर्त्तितत्वको देषजिसमेसाता
न मूर्त्तिपूजन वेद प्रमाण लिषाहै जिसमेस
ामनाहै क्यूके भाष्यका अर्थ किसी २ विद्वा
नोको आतानाहै जोके आजकल मानुषोकोज्यादा
भाषाई पसंदहै इसलीयेमैने ब्रह्मभाष्य औरभा
ष्यभाष्यकासारार्थ भाषामेकरकेलिषाहै सर्वज
नोको उचितहै के इसमूर्त्तितत्वको अथसेले क
र इतिपर्यंतदेषे औरोको दिषावे औरजोमूर्त्ति
पूजनकोनहीमानने कहतेहै के मूर्त्तिपूजन वे
...मे कहीनहीलिषा इसलीये मैंये उद्यमकर्याहै
...ोचाहिये के इनवेदऋचाको अमे दयानंद
...भाष्यकेसाथ मिलावे औरहमको दिषावे
...ाविरुद्धहै औरसबवादेवे अगरजबाब
...वेगेतो इनकाकहना सर्वथा वेदविरुद्ध
...जावेगा ॥

...मूर्त्तितत्व प्रथमभाग मैने इसलीए भाषार्थ मेकीआहै
...भाई मूर्त्तिपूजनको नहीमानने वो साहिबकोई एकसं
...से वाकफनही अगप्रकटहो के इसकेपीछे जो द्वितीय
...निकलेगा वो केवलसंस्कृतकाही होगा परंतुयेभीमा
...रहै के हमारे विद्वानलोकनो आगेही मूर्त्तिपूजनवगैय
...ाकतेहीहै· तिनकेवास्तेसंस्कृतसभाष्यरूपवानाहोगा·

ओंधर्मः सर्वसुखाकरोहितकरोधर्मंबुधाश्चिन्-
धर्मेणैवसमाप्यतेशिवसुखंधर्मायतस्मैनमः
र्मान्नास्त्यपरःसुहृद्भवभृतांधर्मोहिद्रव्यंसतां धम
चित्तमहंदधेप्रतिदिनंहेधर्ममांपालय १ यथाचन्द्रं
विनारात्रिःकमलेनसरोवरं तथानशोभतेजीवो
विनाधर्मेणसर्वथा २ ॥

धर्मेनैकतोलाभः लाभहानीकृ
तःसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसुध
र्मंप्रतिपालयेत् ॥ १ ॥

जबधर्मनछूट्या तबलाभकहा जबलाभकी
हानिहोई तबसुखकहा इसवास्ते संसर्गीको चा
हिये यत्नकरसुधर्मकीपालनाकरणीयोग्य

धर्मेणहन्यतेशत्रु धर्मेणहन्य[ते]
ग्रहाः धर्मेणहन्यतेव्याधिःय[तो]
धर्मस्ततोजयः ॥ २ ॥

धर्मकरकेशत्रुकोजीतताहै धर्मसेही
हरहोतीहै धर्मसेअनेकव्याधियांहरतेहैं
औरजहांधर्महै तहांजयप्राप्तहै ॥

धर्मपानैसेचिन्तापाहल्मीकमि
धनिकापरलोकसहायार्थंभा

...ष्यको ... ...कारी ...की धीरे ...
...धर्म्मी बनालेनीहै उसीतरासे इसमानुष्यको चाहि...
...ये अत्यंतसावधानी औ बुद्धिमानी से धीरे धीरे अ...
...पनेवर्णानुसार रत्नरूपी धर्मको इकट्ठाकरे ॥

पुरुषाणाम् सारमेवज्ञानम्

संसारंच असारंच सारं वस्तु चतुष्टय
म् दानंपरोपकारंच सत्संगंच शिवा
र्चनम् ॥ २ ॥

संसारजोदुनीयाँहै वोह असार नाप्रायमानहै यानै
दुनियांकी हरचीज फानीहै इसमे चार शैयाने वस्तुसा
र दानकरणा १ पराया उपकार करणा २ याने कार
खिरमें कोशिशकरणा हरएकको हाजतरफाकर
णा सत्संगकरणा महात्मासे याने सोहबतने को
करणा चौथा शिवजीसे आदलेकर पाच देवता
...ष्ट देवता की पूजनकरणा येहिचारवस्तु संसा
...सार इनकेसेवनसे इहलौकिक औरपारलौकिक
...सिद्धहोतेहैंऔरप्रत्येकवर्णोंको फलदायकहै औ
...नीयहै अतः संपूर्णधर्म्मिकजनोंको जगतकुछ
...सवचनके अनकूलकरणा अत्यावश्यकहै ॥

नवाव

...कामक्रोधौलोभमोहो देहेतिष्टन्तित
...स्कराः ज्ञानरत्नापहाराय तस्माज्जा

...मनुष्य... ...उत्तम...
...ईश्वर पाने· गोरख इसको कहते है जिससे हम मनहि...
महाज्ञि मला उदय प्रकट होता है सो उसके जगाने...
थे देह मे चार तस्कर अतिबली हमेशा विराजमान र
हते है काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ जिसे प्रत्येक
पुरुष को· याने· हर एक शख्स को सदैव चैतन्य
याने जाग्रद रहना चाहीये कि उके ज्ञान रूपी रत्न को
वोह देहीतस्कर हरणे न पावे ॥

तथाच

मातानास्ति पितानास्ति बंधुनास्ति सहृत्क
थम् सर्वेच ज्ञान हर्त्तारः तस्माज्जा
गृहि जागृहि ॥ ३ ॥

कोई किसी का माता· पिता· भाई· बंधु· मित्र· नहीं
सब ज्ञान हारक और मोह कारक है कोई
के साथ नही जाता साथ जाता तो एक त...
के क्लेशादिकों की सहाय नानही कर सक्ता जि...
क्लेश होता है वोही उसी को भोगना होता है ...
सी के मोहादिक मे न लिप्त होना चैतन्य ता से...
स्या मे रहना उचित है जो तस्कर ज्ञान रूपी...
हरणे पावे ॥ ३ ॥

तथाच

अपायावहाते लोका कर्मणा व...

...प्रतिमा ... जगत ... स्थिति है ...
...है सारभूत नत्तस्य नत्तस्य प्रतिमा करणे योग्य है १९ ॥

यजु॰ वे॰ सं॰ अ॰ ३२ मं॰ ३

नतस्यप्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः हिरण्यगर्भइत्येषः मामाहिंसीदित्येषा यस्मान्नजातइत्येषः ॥

तस्य पुरुषस्य प्रतिमा प्रतिमानं उपमानं किंचि दस्तु नास्ति अर्थात् तत्सदृश्य ऐसा दूसरा वा नअन्यः कोपि नेतिस्य स्यार्थः अथवा तस्य पुरु षस्य प्रतिमा प्रतिमानं इयत्तापरिच्छेदत्वं नास्तीत्यर्थः तस्य व्यापकत्वात्ताम प्रसिद्धं यस्य महद्यशोस्ति सर्वातिरिक्तयशा इत्यर्थः ३ ॥

...नाम वेदीयप्रतिमोपनिषद ९ प्रति ...एजता ... त्वं चगत्वा ... प्रतिमा ... ति ९ ॥

...र्ति एजने से पातक हू रहोकर मोक्ष को प्राप्त हो ...तिमा का अर्थ मूर्ति है और भी श्रुति है ॥

...मवेदीय षड्विंश ब्राह्मणे अद्भुत ...शान्ति प्रकरणे देवतायतनानि कंपं देवता प्रतिमा हसन्ति रुदन्ति गा ...नृत्यन्ति स्फुटन्ति स्विद्यन्ति उन्मी

...थालीप...से ...मेज
मोः ऊँविस्नवेस्वाहा ऊँसर्वभूताधिपत
येस्वाहा ऊँचक्रपाणयेस्वाहा ईश्वराय
स्वाहा ऊँसर्वपापशमनाँस्वाहा इतिचा
हुतिभिर्हुत्वा अथसामंगायेत् ॥

अर्थसामवेदकेछवीसवेब्राह्मणमे २६ अद्भुतशान्ति
प्रकरणमेलिखाहै पीछेअद्भुतशान्तिकथनकर्ते
है केजवमहाउपद्रवकासमयहोताहै तवउसीका
लमेदेवतोकेमंदिरहिलतेहै देवतोंकीप्रतिमाहस्ती
है औररोतीहै औरगातीहै औरनाचती औरहटजा
तीहै औरप्रतिमासेप्रसीनानिकलतेहै और...
बोलनामीटनाहोताहै औरस्थानसे चलज...
परउपरहोजातीहै ऐसे २ उपद्रवजवहो...
देशकाराजायाप्रजाइसमंत्रोसे इदंविस्नुर्वि...
रस्थालीपाकसेहवणकरेतो उपद्रवोकीशा...
है इसमंत्रसेयेमालूमहुआकेदेवताकामंदि...
तिओरहाथमेचक्रभीहै इसेहाथभीहै ॥

अथर्व० कां० ३ प्र० ९ मं० १०

संवत्सरस्यप्रतिमांयांत्वाराज्युपास...
सान आयुष्मतीप्रजांरायस्पोषण...
सृज ॥ १० ॥

अर्थपरमेश्वरने संवत्सरनाममे आपीमूर्ति...
माप्रकटकरीसो संवत्सर अर्थात् वर्षमें...

...प्रतिमा एजन करे और प्रार्थना है जो हम ... कर
...है तिस से हे प्रतिमा हे विद्यमान परमेश्वर हम को और
हमारे पुत्रादिकों को आयुष्मान धनवान पुष्टिवान पु
त्रवान करो ९ ॥

ऋ॰ मं॰ ३॰ १॰ अ॰ ४॰ १॰ सू॰ १२१॰ मं॰ ५

आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना
जनयन्तीरग्निम् ततो देवानां समवर्तता
सुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ५

अर्थ जो ह परमेश्वर समस्त ब्रह्मांड को अपने गर्भ में धारण
करता है और जो स्वेच्छा से ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करता
है तथा जो हिरण्य गर्भ को उत्पन्न करके ब्रह्म
... जल से सर्व ब्रह्माण्ड को प्राप्त करता है ब्रह्मा
... गर्भ से अर्थात् हिरण्यगर्भ भगवान् समस्त
... के प्राणरूप उत्पन्न करणे वाले ब्रह्माजी उ
... तो उस प्रजापति देवता के अर्थ हवि देते हैं
... यज्ञ करते हैं अतः यज्ञ हवन करणा परमेश्व
... देवताओं को तृप्ति अर्थ है ९ ॥

यजु॰ अ॰ १८ मं॰ ६४

... ... दातं यत्तं पाथ्यद्दहितृणः
... दाग्नि वेश्वकर्म्मणः स्व देवत्रा गोदयत ६४
... वेश्वकर्मणः मनसः मनो वेश्वकर्म्मणः पा
...ः मानस स्वः नः अस्माकं वाग्गाभृत ... नत

...वेदनाम... ...ाम... ...नेव्याम...
ह... भोजनतृ पा... ...दिव... ...ः दक्षिणाः ९७ अर्थ
विश्वेदेवा श्रौ० अग्निः हमारा कीओ हवायनउस्का
लस्वर्गमे देवताओंसे वर्णनकरो और जो हमनेक
न्याभगीजामातृआदिकोंदीआहै और अन्यब्राह्मणा
दिकोंकोश्रद्धापूर्वक दीआहै औ इष्टकर्म किं तम्र
ग्निहोत्रादिककीओ औ० पूर्तिकर्म किंतदेवताओंके
मंदिरठाकुरद्वारेवनवाए औ पथा कालउनीतति
थिओं औ० पर्वोमेतीर्थादिकोंमेदानदक्षिणाजोदी
आहै० सोसमभक्ष्हो ९४ ॥

सामवेदेउत्तरार्चिके

त्रीणिपदाविचक्रमेविष्णुर्गोपाअदाभ्यः
अतोधर्माणिधारयन विष्णुकर्माणि...
पश्यत ॥ ८ ॥

अर्थ उसपरंब्रह्मपरमेश्वरअविनाशी गोप...
श्री कृष्णविष्णुभगवानने अपनेचतुर्थभाग...
उत्रैलोक्यकोउत्पन्नकर अपनीविभूतिनांश...
रूपसेमहाकालिमहालक्ष्मीमहासरस्वती...
टकी आओर अपने आपविष्णुस्वरूपसेसव...
कोदेषनेहै० ॥

अथर्व० कां० ११ अ० २ मं० ५

नमस्तेपतेपश्यपते पाहि चक्षुषिनेभव...
वेरूपायसंदृषोप्रतिचीनायतेनमः ५...

...ऋ॰ अ॰ १ व॰ ... मं॰ ... अ॰ ... सू॰ ७४ ऋ॰ ... ।
...आनेसुपर्णाअभिनंनेरावैःकृसोनोनाव
वृषभोयदीदंपिवाभिनंसयमानाभिरा
गामनेनिमहःस्तनयंत्यभ्राः २ ॥
अर्थ हेसदानंदकन्दनेसुपर्णा नमारायणमकान्ति
जोचमनकारहै रावैः गामनशीलवायु केसाथआश्र
मिनंन चारोओरमेचकी रु चिकोहरकरना कृसः
श्रीकृस्नचंद्रजी वृषभाःभक्तोमनोर्थपूरणकर्ता नो
नाव नेगोवर्द्धनपूजाकीस्तुतिकीनव अगान गोवर्द्ध
नपर्वतसकापासेमिह संवर्तकनाममेघोकासमूह आ
पनेनि चारोओरवसनेकुअनेनव पिवाभि शांतरूप
...नामि मंदमस्तकानवचनोके साथ अपने ह
...स्मोंकोअभयप्रदानकीयाके इंद्रकीवर्षासे मा
...भयकरो ओरगोवर्द्धनकोउठाकरसवव्रज
...कीरक्षाकीओरउससमयस्तनयंत्यभ्राः अभ्र
...ध्येवोहरहठनरवर्षाकरनाहुआ ऐसीकेतल्पश्री
...काबलरूपहोना ओरदेवकीकेगर्भसे अव
...णाकरणा अथर्ववेदीयनारायणोपनिषदमे
...सक्ताहै देषनाहोवेगा ॥ २ ॥
प॰ ज॰ अ॰ १५ मं॰ ५४ मेरिरे १॰
...मस्वाग्नेप्रतिजागरहित्वमिष्टापूर्तेसंसृ
...याम्पंचअस्मिन्त्सधस्थेअध्युत्तरस्मि
...यजमानश्चसीदत ५४ ॥
...ः

... हे ... बिसे देवाद्रष्टाप...
रणेवालो यजमान देवनोंके साथ पैठने योग्य होजा...
अर्थात् वैकुंठमें वासपावे ८१ ॥

साम॰ उत्तरार्चिके

ऊँ स्तोत्र्यदेनीमभिवर्पसामृज्ञनयन्योषां
हृहतः पितरुर्जाम् ऊँह्म्मानर्थंश्चस्य्यै
स्यस्तभायान्दिवोवस्तूमिररनिविभाति
॥ ३ ॥

अलजो परमेश्वर है उसने अपनी योषा नाम महामा...
याकों अपने अतलतेज और पराक्रमसे व्याप्तकर अ...
पने स्वरूपसदृश नाम रूप स्वर्ण संयुक्त विद्युन्म...
ली के सदृश आनंद जी के चर प्रकट करा और अपने...
सूर्य आत्म निर्गुण रूपको सगुणधारण करा...
भिमानसे रहित और रूपावतार नानागुणा और...
मसे प्रकट करा भक्तजनोपर अनुग्रह दृष्टिकरणे...
और दुष्टोपर क्रोधदृष्टि करणेको अर्थात् उनके...
करणेको होय ॥ ३ ॥

अथर्व॰ कां॰ १ अध्या॰ २३ । २ । ४ । ५ ।

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे...
मस्ते अस्त्वश्मने हूडाये अस्यसि ॥

हे ईश्वर देव नमस्कार ... रजनीय मूर्तिमें व्यापक हो ...
माया विजली की चमक समान जो रूप है जिसके...

...ग्र...नमकोनमस्कारहै·...ऋ·...
...करणोर्थ।श्रौरउनकेपात्रश्रौंश्रौरश्र......नोश्रौ
हैसकोपरमात्मउपहारकरनेहोसो उनमकोनमस्का
रहै· ॥

ऋ·श्रष्ट·१ श्र·२ मं·३

श्रग्निनारयिमवश्नवत्पोषमेवदिवेदिने
यशसंवीवत्तमम् ॥ ३ ॥

श्रग्निना परमेश्वरकी श्रधिष्ठित श्रर्थात् जिससे परमे·
श्वरने श्रधिष्ठानकीयाहै उस रयि नाम मूर्तिका प्रतिदि·
नररोज दर्शन पूजन करो जोकोई परमेश्वरकी
मूर्तिका पूजनकरतेहैं उनको पुष्टि धन पुत्र श्रौर
कीर्ति...प्राप्तहोतेहैं·परमेश्वरदयालुःहै· ॥
...लोकिमा... य·ज·श्र·१८ मं·६·
...त्रा...नाथपरमेष्ठोमनदेवासदस्याविद
...पमुपयदागछन्तिविमिदेवयानैरि·
...पूर्तंकृणवाथाविरस्मै ६· ॥
...नेदेवताहै वे·सभपरमपवित्रस्थानस्वर्गनिवा
...जोश्रपनेभक्तयजमानजाने·श्रौर जब २ विमा
...बैठकरयजमानकेयज्ञश्रौरपूजनस्थानमेजा
...रउसको इष्टपूर्त कर्मकी श्राज्ञा श्रौरवासना
...· ॥ ६· ॥

साम उत्तरार्चिके

नमः॥ श्रुणाद्धिवेणीरभिराम... मेरः...
अर्थ भद्रसेरामभद्रासेसीताजीजोहैं हेराम...
ब्रह्मरूपश्रौरसीताजीउनकीमायाशक्तिरूपहै...
तव मायारूपरावणने सीताजीकोजोकेहरि...
केरुधिर उत्पन्न हुईथीतिसकारणउसकीभग...
नामहुईउनकोहरिणकीया पश्चातश्रंतकालमे...
धसे दुर्ज्वलितरावणकुंभकरणादिसहितरामचंद्र
जीकेसन्मुखहो युद्धकररामचंद्रकेयामकोपधारे
रामचंद्रकेबाणसेमरकरवैकुंठकोगयाः ॥
अथर्व॰ कां॰ ११ अ॰ २ मं॰ ६ ॥
ओंके भ्यस्तउदराजिह्वयाश्रस्यापने...
गाधायतेनमः ॥ ६ ॥
हेमहादेवजीआपके श्रंगकोश्रौर उदरको...
को श्रौरवाणीकों श्रौरदंतपनालिको श्रौ...
का कोंसर्वकोधारीरावघवकोनमस्कारहै॰
ऋ॰ वे॰ संहि॰ तती॰ अष्ट॰ ३ अ॰ ८ मं॰
५ वर्ग॰ ९ अनु॰ १ मंत्र ३ ॥
नवश्रियेमरूतोश्रर्चयंतरुद्रपते...
मवाहविते पदंपहिसोरूपमे...
त्विनेनपासिगर्यनानमोनाम् ॥ ३ ...
हेरुद्रतेनवचाहविअंजन्मलिंगं यन्मरूते...
येसंपदे अर्चयंति विसोरूपमलक्षणाधि...

...उसको नमस्कार है...
...होताहै ...मनसाद... ...नो भिद... ...नो अम
...माह्वः ॥ ३ ॥ भाषार्थ ॥ हे रुद्रतेरा ...
...जो रुद्रलिंग है उसको मह देवता पूजन करता
...किसवास्ते के लक्ष्मीवास्ते और जिस रुद्र ने पूज
...करणेवाले भक्तजनों को और लक्ष्मी करके साथ जो
...की बड़ाई है उनको निश्चय करके देने है और वि
...की सेवा की न्याई तेरी सेवा करके प्रसाद को भी प्राप
ने इष्ट की प्राप्ति होवे ३ इस मंत्र से माल्य मढ्या पूजा
करनेवाले को ऐसा फल होता है ॥

य॰ अ॰ १६ मं॰ ९

...नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशांच पत
...मो नमः ९ ॥

...बाहवे ज्योतिरेव बाहू यस्य तस्मै ज्योतिर्वै हिर
...दा ९।२।२।४ नमः सेनान्ये भक्तेभ्यः काम
...भक्तेभ्यः ग्रामदस्मादि सेनां नयति तस्मै नमः
...पतये पालकाय नमः ९ ॥ भाषार्थः ॥
...अर्थ ॥ जिन महादेव की स्वर्णरूपी भुजा
...सेनानी फौज को प्राप्त करे जो दशों दिशों का
...है उनको नमस्कार है अतः भुजा विना शरीर
नहीं सकी है और जब शरीर प्रकट है तो वेद
...से पूजन सिद्ध है ९ ॥

...मवेदीय केनोपनिषद् मं॰ १५ प्रमा
...सत्यार्थ प्रकाश में पृ॰ ६८ पंक्ति २९

॥ ...
नम ... ॥
कमेवायं म... मेति १४ ॥
ब्रह्मकिंतपरमेश्वर देवताओंकोज यऔरसा
र्थऔर अनेकवरदीये बृहब्रह्मकेसा है सर्वइ
संपूर्ण प्राणियोंकीरचनाकरनेवालाधार्वप्राणि
मानऔरसर्वजगतस्थितिऔरनाशकरणेवाला
है ॥

अथर्ववेदे कां० २ अ० ३ वा० ९ मं० १
यथाश्वत्थवानस्पत्यानारोहन्कृण
वेधरान् एवामेशत्रोर्मूर्धानंवि
षगिभिन्धिसहस्व च १ ॥
हेअश्वत्थदेवजिसप्रकारतमदूसरेहवनोप
नेऔर उनकोंनीचाकरनेहोउसीप्रकारआ
नुभाव ओ अनलबलसेमेरेशत्रूकेम
नोदुकरमेराडुःखदारिद्रहरो अनपववेव
पीपलपूजनसिहहै और वेदकेविनाको
नहीं किंतसंसारमेवेदसेभिन्नकोईपदार्थ
ऋ० सं० अ० ४ अ० २ वर्ग० ११ मं० ५ अ
१ सू० ४ ॥ आवोब्रह्माणप्रजाप
सपर्यनकीरिणान्देवानमसा
परिवत्न ऋविसर्यःस्परिविवन
आयान्वमोनोरपमायाः अपुन
न ५ ॥

...उमके...नस्व...है· ...भिवहूँ १४ ऋ...
...सैनाकरो केसोव्रलाउ है· योगकरे...हैं·
...विजो ऋषिहै स्वर्गमेसूर्यकानेत्रहै· उसकोधार
...है·...भण ॥

य· अध्या· २ मं· १८

संस्रवभागास्थेषाबृहन्तःप्रस्तरेष्ठाः
परिधेयाश्च देवाः इमांवाचमभिवि
श्वेगृणन्तआसद्यास्मिन्बर्हिषिमा
दयध्वंस्वाहावाट १८ ॥

हेविश्वेदेवाः यूयंसंस्रवभागस्थेनया ३ णाञ्जनेन।
...संस्रवलक्षणेनाम्नेनविलीनहूनेनहहांतोमहा
स्तीन...किंचयेप्रस्तरेष्ठाः प्रस्तरेणाधानेनिष्ठंती।
...स्तरेष्ठाः प्रस्तरस्थापिन येचपरिधेयाः परधि
...ः संतितेविश्वेदेवाः इमांमदीयांवाचंशृभि
...सर्वत्रवर्णयंतः अयं यजमानः समी
...यजेनीस्येवं सर्वेषांदेवानांमध्येकथ यं तो
...अस्मिनवर्हिषियज्ञेआसाद्य उपविश्य माद्य
...मध्वंमोदयध्वंवा स्वाहावाटणात्मोहवि
...सर्वथा दत्तमित्यादरं दर्शयत १८ ॥
...अर्थ ॥ यजुर्वेदके· दूसरा ध्यायके अठा
...मेलिखाहै· केहेविश्वेदेवाः तुसीयज्ञभा
...नहोयज्ञभागखाणोसेवडेहो औरतुम।
...णविशेषमेरहनेवालेहो औरयज्ञभाग
...र देवनोमेवैठकरयजमानकीस्तुतिकजे

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नम
किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः क
पर्दिने च पुलस्तये च नमः इरिण्या
य च प्रपथ्याय च ४३ ॥

सिकता सम्भव सिकत्यास्तस्मै नमः प्रवाहे भवः प्रवा
ह्यस्तस्मै नमः क्षुद्रसिलास्तु द्रूपाः शिलापाषाणा
यस्य स किꣳशिलास्तु रूपाय नमः क्षियंति निव
सं त्यापो यत्र स क्षयणः स्थिरः जलप्रदेशस्तस्मै नमः पु
कपर्दी जटाजूटो अस्यास्तीति कपर्दी तस्मै नमः पु
रो तिष्ठति इति पुलस्ति छांदसाथस्यानत्वं रस्या
त्वे छांदसं तस्मै नमः इरिणं ऊषरं तत्र भवः इ
रिण्यस्तस्मै नमः प्रपथो बहुसेवित मार्ग भवः प्रप
थ्यस्तस्मै नमः ४३ ॥

य॰ अ॰ ५ मं॰ १५

इदं विस्नर्विचक्रमे त्रेधा निधधे प
समूढमस्य पाꣳसुरे १५ ॥

अर्थ विस्नुभगवान्ने वामनरूप धारण करके
सृष्टिका विक्रम कीया अर्थात् तिन तीकरीओं
मिश्रका पृथ्वी स्वर्ग तीनो स्थानो को एक २ पद
अर्थात् अग्निः वायुः सूर्य रूपी चरणोसे
कोमिना १५ ॥

...सको...हे... ...म कु...
...ऐसेनोअजयन्सा... ...ः २५ ॥
...थे वाराह कूर्म्म वामन नृसिंह हंस वल
...व निष्कलंक परशुराम मत्स्य राम यार
...कणीवाले परमेश्वर ने असंख्यसेनाकोजीता
...ओर हुए हैसोकानाशकीआजोके देवता ओर
मनुष्योकोपीडनकरतेथे ॥

ऋ॰ अ॰ १ सू॰ २२ सावित्रीवासूर्य्यकी
पूजा ॥ हिरण्यपाणिमूतये स
वितारमुपह्वये सचेत्तादेवतापदं १ ॥

...ऋषिहिरिण्यस्तूपजी कहतेहै मैअपनीर
क्षाकेकारणसूर्य्यदेवकोबुलाताहूं किंतुस्मरण
...जोमुजे देनेकोसाय हाथमेस्वर्णरख
...ओरयजमानकेचरचनेकी जगह्यानेच
...है १ ॥

...पानपातमवसेसवितार मुपस्तु
...तस्य व्रतान्युषमसि २ ॥
...रक्षाकेकारण सूर्य्यदेवकीस्तुतिकरोजो
...काप्राकरनाहै हमउससूर्य्यकीपूजा
...तेहै ॥ २ ॥

...भक्तारंहवामहे वसोश्चित्रस्यरा
...सः सवितारंनृचक्षसम् ३ ॥
...सूर्य्यकोस्मरणकरतेहै जोसदाहीप्रका

पुनः ॥ दाताराधासिषुभन्ति ४ ॥
हे मित्रो वेदो सूर्य्यनि सन्देह स्तुति के योग्य इसका
रण के वो हमारी रक्षा और धन देना है॥
फिर इसी अष्टक के चोवीसवे २४ सू॰ मे
अभित्वा देव सवितरीशानं वार्य्याणा
म् सदावन्भागमीमहे ५ ॥
हे सूर्य्य आडो सदा कारक्षपाल है हम रक्षा
चाहते है जो आप धन के मालिक हो इत्यादि हो
र बहुत श्रुतिः ॥ ५ ॥
फिर इसी अष्टक के पैतीसवा सू॰ ३५
सूर्य्य की पूजा ह्वयामि देवं सविता
रमूतये मैं सूर्य्य देव को अमीरक्षा
के कारण स्मरण करता हु॥
आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवे
शयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन
सविता रथेना देवो याति भुवना
नि पश्यन् ६ ॥
अर्थ आकाश मार्ग मे स्वर्ण की रथसे फिरते
हुए मते देवतों का और मनुष्यो को अपनी अप
नी स्थान स्थिर कर्ने औ लोकों को देखने सूर्य्य
नारायण चले आते है॥

ता बोधमानः ८ ॥

वोह सूर्य्य नारायण जोस्तुतिकेयोग्यहै॰ कैसाहै जोदोघोडेम्बेनउनके ऊपरचडेहोए हरसेआ॰ कर सभीकेपापोकोमिटानेहै एसेही हमारेकी येकर्म्मोकोसाक्षि होकरविस्नुनारायनकेपासउ चातेहै॰ ॥ अर्थ फिरइसीअष्टकका॰ सू॰ २५ ऋषिप्रस्कणएकहनेहै॰ इनकीतीनऋचाहै के वल एकऋचालिषतेहै॰ जिनकेविषयमेय हकथाहै॰ कण्व प्रस्कणवऋषिकहनेहै॰ के कु ष्ठादिरोगोकीनिवृत्ति इसीमंत्रसेहोतीहै इसमं तीनषं॰ पुराणसे शौनकजीकहतेहैके जोइससमं त्रोसि तीनवार परकरजलकोछिनके उसकेरो ॰ नेरहै और जेकरइसीमंत्रकोतीनवारपर जलकोपानकरे किंतपीवेतौंकापरोगकिं ॰ए औरविषादिसभदोषाहरहोवे॰ विषह ॰वे औरजोइसलोकमेसुष परलोकमेमु॰ ॰होगी वोमंत्रकोनहै॰ वोमंत्रपरमऔषधि ॰ किंतवोटवाईमंत्रयेहै॰ ॥

॰द्यन्नद्यमित्रमहआरोहन्नुत्तरां॰ ॰देवम् हृद्रोगंममसूर्य्य हरिमाणं॰ ॰च नाशय शुकेषुमेहरिमाणंरो

…स्य॥ १७ … स्तहि हिवं…

स्तेयं यप्मोऽग्रहं हि घनेरथम् ॥

यजु॰ वे॰ अ॰ १५ मं॰ ६५

सहस्रस्य प्रमासि सहस्रस्य प्रतिमासि
सहस्रस्योन्मासि साहस्रोसि सहस्रा
यत्वा ६५ ॥

सहस्रस्य सहस्रज्योतिसंख्यातिः
हे आत्माये त्वं सहस्रस्य प्रमा ज्ञानं
ददाति सहस्रोमहानारायणस्तस्य प्रमा ज्ञानं
ज्ञानसाधनं असि सहस्रस्यमहानारायणस्य
प्रतिमामूर्तिः असि सहस्रस्यमहानारायणस्य
उन्माने तत्वा असि सहस्र महानारायणोप
असि सहस्रायमहानारायणासैत्वा त्वांप्रोद
मि यथाश्रुतिः अत्रैषसर्वोऽग्निः संस्कृतस्तासि
न्देवानानदम्नत्वं रूपमङ्गमम दकुस्तथैवा
त्रयमेनदम्नत्वं रूपमङ्गमं दधातिहिप्राह
मानोयजमानोऽग्निर्यावन्तस्यमात्रानावनैवा
त्रैनदम्नत्वं रूपमङ्गमं दधाति सर्वंवैसहस्र
त्वं सर्वंणैवास्मि त्रैनदम्नत्वं रूपमङ्गमं दध
ति ॥

ॐसन्यासधर्मव्याह

उक्तंच

वेदान्त वाक्येषु सदारमन्तः भिक्षा

...अनेके... ...ः २ ...

अर्थ वेदान्तके वाक्योमे सदारमनेवाला अर्थात् वे
दान्तकोजाननेवाला और उसके अनकूल चलने
वाला हो और जो अन्नभिक्षामे प्राप्त हो उसीपर संत
ष्ट रहे अर्थात् आजकी भिक्षा आजही भक्षण कर
लेहरु सरेदिनके वास्ते न रक्खे और सदा संतोष ह
निवनी रहे शोकरहित हो किसी का शोक नाकरे द
यालुःस्वभाव नाम सब लोकपर करुणा करणेवाला
हो ऐसे गुणयुक्त होकर जो संन्यासी हो और कोपी
न वांधे किंतु ईश्वरको वांधे वो बहुभाग्यवान और
माननीय है अस्माकोपिन २ ॥

तथाच

मूलं तरोः केवलमाश्रयंतः पाणि
द्वयं भोक्तुममन्त्रयन्तः कन्थामपि
स्त्रीमिव कुत्सयन्तः कौपीनवंतः
खलु भाग्यवन्तः २ ॥

अर्थ वृक्षकी जडके ऊपर आश्रयनाम स्थिति र
याने वास करे अर्थात् स्थानादिकोंसेकुछ प्र
योजन न रक्खे और रत्न ऐसी वस्तुयोंकी इच्छा करे
नो हाथ जो है वोही खानेके पात्र समझे और
सी पात्रको न रक्खे और ईश्वरकी कथामृत ली
चरित्र उदरमे रक्खे किंतु इससे न मरहै और स
व मयरहै और औरोंको भी मग्न करावे किंतु उ
हो वे ऐसे गुणयुक्त जो पुरुष संन्यासया

नित्यं ... यन्ति मन्तः नानेन म...
नवहि स्मरन्तः कौपीनवन्तः खलुभा
ग्यवन्तः ३ ॥
अर्थ नित्यप्रति आनंद स्वभाव अर्थात् आनंद स्व
वरूपामे रहे और सदैव काल संतुष्ट रहे और स्वामी
इन्द्रियोंको जीते और आदिमध्य अन्त तीनो अ
वस्थाओंमे एकसार रहे और ब्रह्म मन दर्यणाके न
त्यरावे ऐसे गुणवाला संन्यासी जो कौपीनका धरै
ऐसा भाग्यवान है यह भाग्यवान है अ
सको धन्य है और वोई धन्यवान भाग्यवान है अ
न्यः न ॥
तथाच
देहादिभावं परिवर्त्य हृष्टा द्वात्मानमा
त्मन्यवलोकयन्तः अहर्निशं ब्रह्मणि
ये रमन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्य
वन्तः ४ ॥
अर्थ देहको नाशमान जान उसके प्रेमको त्यागे
र अपने आत्मामें ईश्वरके प्रकाशका विचार
और अपने आत्माके तत्त्व सबको देखे रात्रिदिन
ब्रह्मके ध्यानमे लीन रहे और किसी वार्तासे कुछ
प्रयोजन न रखे और गुणयुक्त संन्यासी कौ
पीनवाये तो वो ही भाग्यवान माननीय है
तथाच ५

लभागपवन्नः ५ ॥

अर्थ पंच अक्षरकाजोपरमपवित्रमंत्रहै॰ तिस कोरात्रिदिन उच्चारणकरनारहै॰ औरपशुओंके पति शिवजीहैं॰ तिनकाध्यानकरनारहै॰ औ रभिक्षाकरकेजोभोजनप्राप्तहोवे संतोषपूर्वक उसकोभोजनकरे औरवस्तुकासंचयनकरे औ रदेशाविदेशाभ्रमणकरनारहै ॥ करके संन्या सीकोएकजगहतीनरात्रिअधिकरहिनायोग्य ॰हि ऐसासंन्यासीहोकरकोपीनवाधेनों वोह ॰ासीमानने योग्यहै इतिव्याजस्तुति ॥

ताराप्राइसकाधेहै॰ जोसे न्यासीनिपत्तमेहै उनके तीए येस्वादुःभोजन च टनीहै॰ ॥

श्रीगंगादितीर्थोंकीमहिमा ऋग्वेद ॰ ८ अध्या ३ वर्ग ७ मं॰ १॰ अनु॰ ६ सू॰ ७५ मंत्र ५ ॥

॰मेसेगंगादिनदियोंकीमहत्वताप्रगटकीजा ॰ ता नवघ्या ॥

॰मं मेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रि

॥
ा हेयमुना हेसरस्वती हेशुतुद्रिहे हेपरु
ष्णः हेमरुद्वृधो हेआर्जीकी हेपरुष्णी हेआसि
क्नि हेवितस्ता हेसुषोमा समस्तनदीदेवियोंत
महमारेस्तुतिस्तोत्रसुनकेप्रसन्नहो आओहमा
रेपातकनिहत्यकरो ॥ अन्यच्च ॥ यज्ञविषय
औरस्नानसमयभीइननदियोंकाआवाहनवेदमं
त्रसेकियाजाताहै ॥ तद्यथा ॥

ऋग्वेदमे १। १९९ सू: ६४ मं: ९
सरस्वतीसरयुःसिंधुरूर्मिमहोम:
हीरवसायंतुवक्षणीः देविरापो:
मातरःसूदयित्न्वः घृतवत्पयोम:
धुमन्नोअर्चत ॥

महानलहरोंऔर प्रवाहसंयुक्तसरस्वती स
यू सिंधुनामादिजोनदी देवियांहैं सोरक्षा क
नेकेलियेहमारे यज्ञमें आओ औरहेदेवि
माताके समान हमारी पालनकर घृत उ
मधु हमको देवो विचारकीवातहै कि इन
नों मंत्रों सेकैसास्पष्ट गंगादि नदियोंकादेव
व प्रगटहै ॥ ॥ अनुक्रमणिका ॥
१ प्रथम: मंत्रमे साक्षात प्रतिमारूपवर्ण
करा जोमंत्र ऋ·वे·को १९४· ॥
प्रतिमावर्णनहै जो
२ द्वि· मं·मेसाक्षात

...के ... है ...
...म· मे लिखा है अग्नि ... रना है
... सा· वे· का है ॥
... यं· मं· मे· हवनविषयजिसमे परमेश्वरकीप्र
सन्नता· ऋ· यजु· वे· ॥
६ य· मं· मे· हवन यज्ञसमाधानकीया है· ॥
७ स· मं· मे पर्दे खलनेकईएकरूपधारकरजी
वोके कर्मोकोदेखनेहय ॥
८ अ· मं· मे· सखनेआदिकोकों नमस्कारहै· अर्थ
९ न· मं· मे· कृसजीकादेवकीकेगर्भसेप्रकटहो
ना औरगोवर्ढ़नकाहोनासाफहै· ॥
... द· मं· मे· वैकुंठमेयजमानकोदेवनापुचानाहै·
... प· मं· मे· कृस्नावतारसाफहै· सा· वे· मेहै· ॥
अंतमे गंगादितीर्थोकीमहिमाहै
... हा· मं· मे· पाषानमेमूर्तिकाहोना जाहरहै·
॥
...ाहीसभऋचाक्रमसे पैले ऋ· दूसरे· य· ती
...रे· सा· चौथे· अथर्वका है· इकैंती· बावैनी ऋ
...है सभसे मूर्ति एजासिद्धहोतीहै सभदेखनेसे
...मालूमहोतीहै जिसमित्रवरको· कोईभ्रमहोवोमे
...रासेएकलेवादेखलेनहीतो वेदालयमेजा
...देखले येदेशवासीजनोकेलीयेहै मगरकि
...महात्माकाजोदेशमेनही उसकोभ्रम होतोप
...सेभ्रम निकाललवे· ॥ सम्पादक डुनी
...शर्मा ॥ मंत्री· सम्मतवईनी धर्मसभा अम
तसर·